ईदगाह
स्टार
कॉमिक्स
सीरीज़
S.C.S: 02
RS. 5/-

हमारी बात तुम्हारी बात
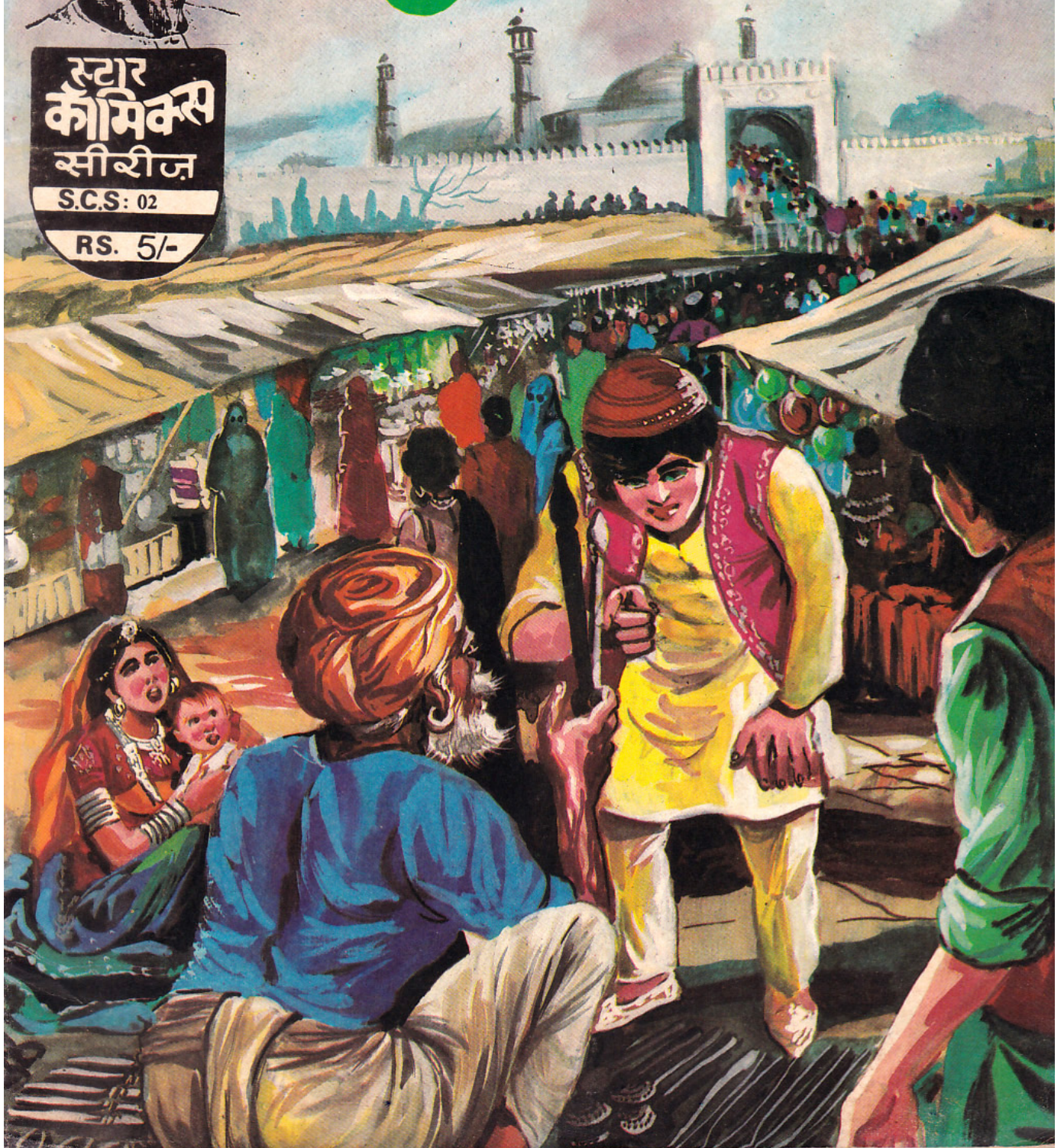
प्रेमचंद के नाम से कौन परिचित नहीं है। अमर कथा शिल्पी **मुंशी प्रेमचन्द** के उपन्यासों व कहानियों के हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं में पुस्तक रूपी कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, इटालियन, चीनी जैसी अनेक विदेशी भाषाओं में भी इनका अनुवाद हो चुका है। इस विश्व प्रसिद्ध साहित्य को एक बिल्कुल नये अंदाज में प्रस्तुत करने का गौरव प्राप्त हुआ है **स्टार कॉमिक्स सीरीज़** को।

स्टार कॉमिक्स प्रस्तुत करते हैं

मुंशी प्रेमचन्द के अमर साहित्य को सरल, रंग-बिरंगी व रोचक कॉमिक्स के रूप में।

इसी माह प्रस्तुत हैं। इस **"कलम के सिपाही"** की दो और सुप्रसिद्ध कहानियां, **स्टार कॉमिक्स** के सौजन्य से

पंच परमेश्वर

व

ईदगाह

आपको यह कॉमिक्स कैसे लगे, हमें लिखना न भूलिए। इससे अगली कॉमिक्स को और अधिक रुचिकारक बनाने में मदद मिलेगी।

आपके पत्रों का इंतजार रहेगा।

प्रकाशक **स्टार जर्नल्स** :"स्टार हाऊस"
11/370, ललिता पार्क,
लक्ष्मी नगर,
दिल्ली-110092.

रमजान के पूरे तीस रोजों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। गांव में कितनी चहल-पहल है। ईदगाह जाने की तैयारियां हो रही हैं। तीस कोस का पैदल रास्ता, फिर सैकड़ों आदमियों से मिलना-भेंटना। लड़के सबसे ज्यादा प्रसन्न हैं...
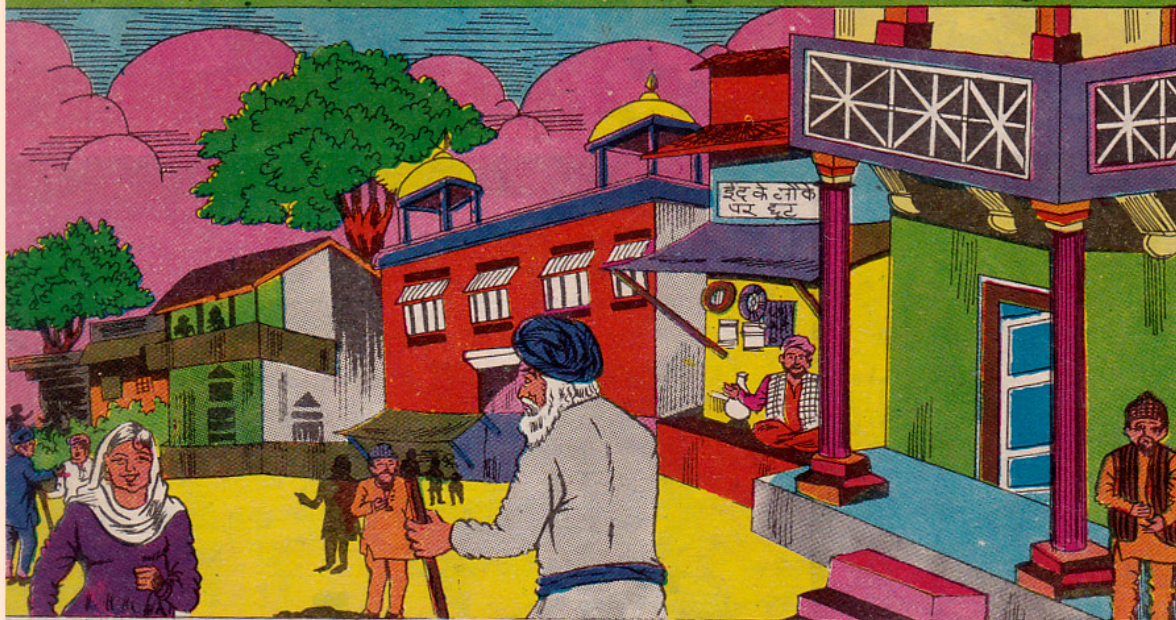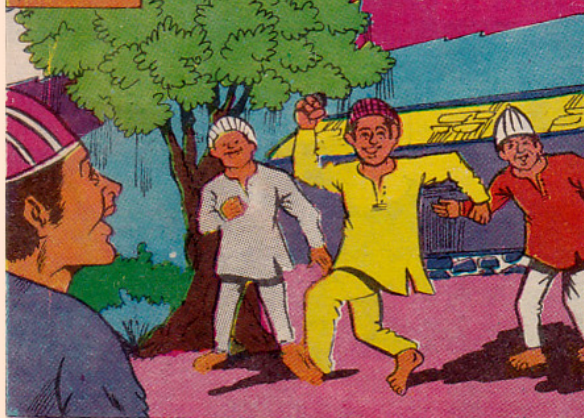
और सबसे ज्यादा प्रसन्न है हामिद। वह चार-पाँच साल का गरीब सूरत दुबला पतला लड़का जिसका बाप गत वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती होती एक दिन मर गई। अब हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना की गोद में सोता है और उतना ही प्रसन्न है।

अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही थी।
आज ईद का दिन है और घर में एक दाना भी नहीं है। आखिर किसने बुलाया था इस निगोड़ी ईद को। पर हामिद को इसकी क्या चिन्ता? उसके दिल में तो ईद की खुशी है।
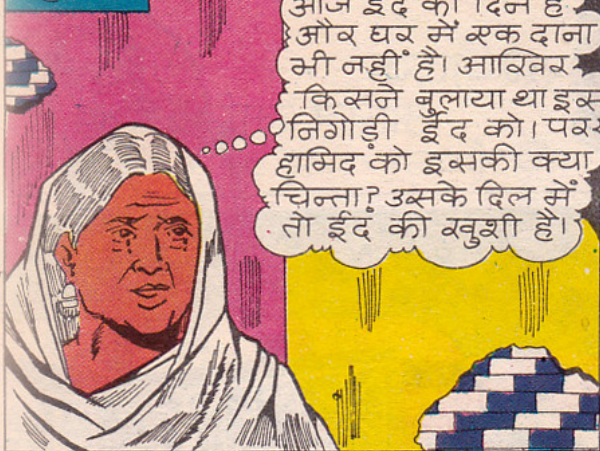
तभी हामिद कोठरी में आकर बड़े ही उत्साहपूर्ण स्वर में बोला-
तुम डरना नहीं अम्मां। मैं सबसे पहले लौट आऊंगा। बिल्कुल न डरना।
कहने के साथ ही हामिद कोठरी से बाहर निकल गया।

उसके जाने के बाद अमीना का दिल कचोट रहा था।
गांव के बच्चे अपने-अपने बाप के साथ जा रहे हैं पर मैं हामिद को अकेला कैसे भेज दूं। नन्हीं सी जान बेचारा हामिद... तीन कोस तक कैसे चलेगा, उसके पास जूते भी तो नहीं हैं। अब तो अल्लाह ही कुछ रहम करे। खैर, बच्चे को खुदा सलामत रखे। यह दिन भी किसी न किसी तरह कट ही जायेंगे। हामिद के पास तो वैसे ही सिर्फ तीन पैसे हैं। तीन पैसे में क्या खरीदेगा बेचारा।
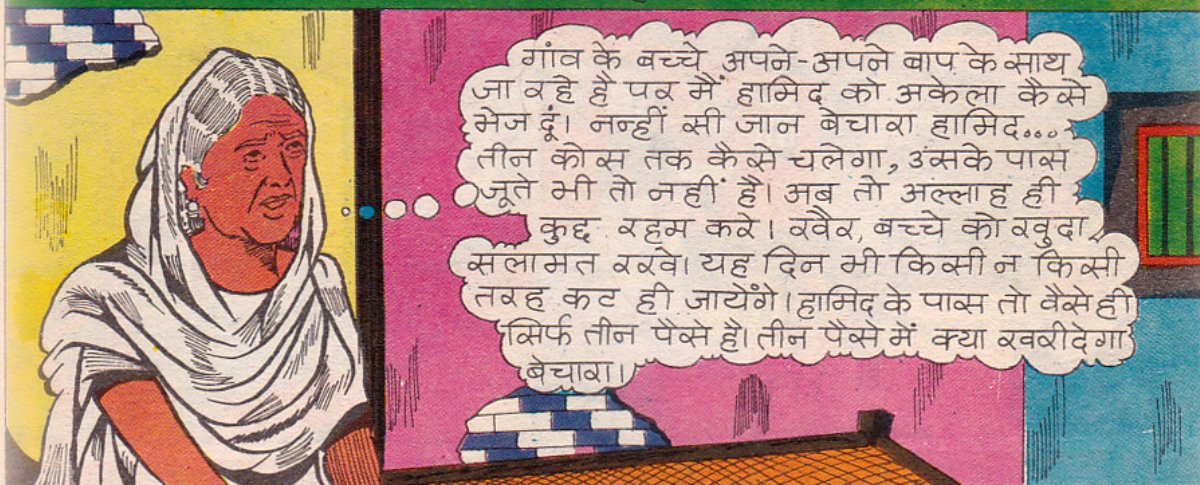
गांव से मेला चला और बच्चों के साथ हामिद भी जा रहा था। कभी सबके सब दौड़कर आगे निकल जाते। फिर किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर साथ वालों का इन्तजार करते। हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गये हैं। वह कभी थक सकता है।

थोड़ी देर बाद वे शहर के बाहरी हिस्से में प्रवेश कर चुके थे। सड़क के दोनों ओर अमीरों के बगीचे थे।
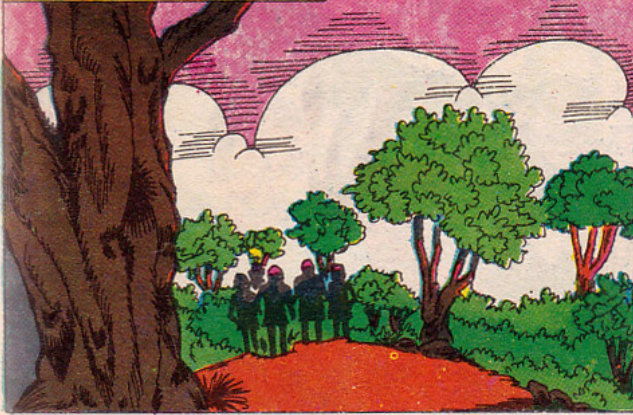
शहर का दामन आ गया। बड़ी-बड़ी इमारतें आने लगीं। यह कॉलेज है, यह अदालत है, यह क्लबघर है।
COLLEGE

आगे चले। हलवाइयों की दुकानें शुरू हुईं। आज खूब सजी हुई थीं।
मिठाई की दुकान
इतनी मिठाइयां कौन खाता है? देखो न हर दुकान पर मनों है।
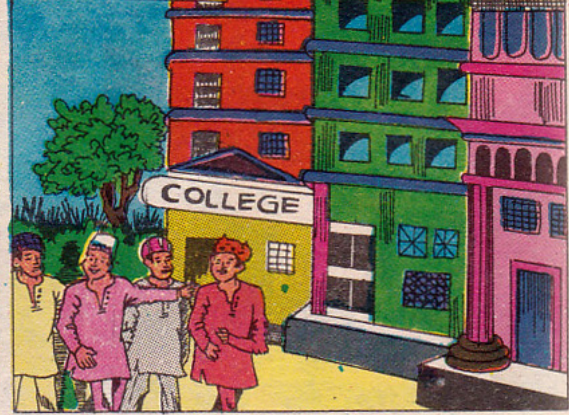
सुना है रात को आकर जिन्नात खरीद ले जाते हैं।

अब्बा कहते थे कि आधी रात को एक जिन्न मिठाइयों की दुकान पर जाता है और जितनी मिठाई बची हो, उसे तुलवाकर सचमुच के रूपये दे जाता है।

तो हामिद बोला-
पर ऐसे रूपये जिन्नों को कहाँ से मिलते हैं?

जिन्नात को रूपये की क्या कमी? जिस खजाने में चाहें चले जाएं। हीरे जवाहरात तक उनके पास रहते हैं।

फिर तो जिन्नात बहुत-बड़े-बड़े होते होंगे?
एक-एक आसमान के बराबर होता है जी। जमीन पर खड़ा हो जाये तो उसका सिर आसमान से जा लगे, मगर चाहे तो एक लोटे में घुस जाये।

लोग उन्हें खुश कैसे करते होंगे। कोई मुझे वो मन्तर बता दे तो मैं भी एक जिन्न को खुश कर लूं।

अब बस्ती घनी होने लगी थी। ईदगाह जाने वालों की टोलियाँ नजर आने लगी। एक से एक भड़कीले वस्त्र पहने हुए। कोई इक्के टांगे पर सवार, कोई मोटर पर, सभी इत्र में बसे हुए। सभी के दिलों में उमंग।
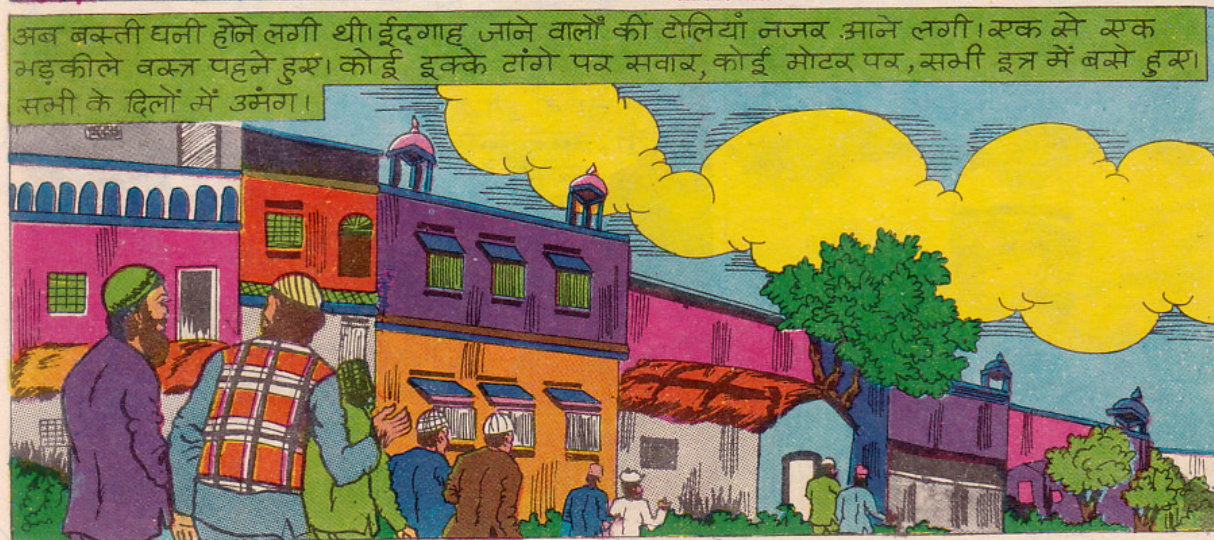
कुछ ही देर में वह सब ईदगाह पहुंच गए।
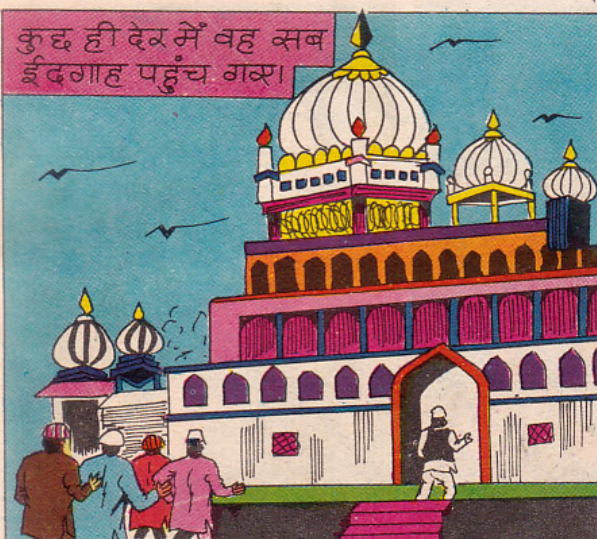
सबके साथ उन्होंने भी नमाज अदा की।
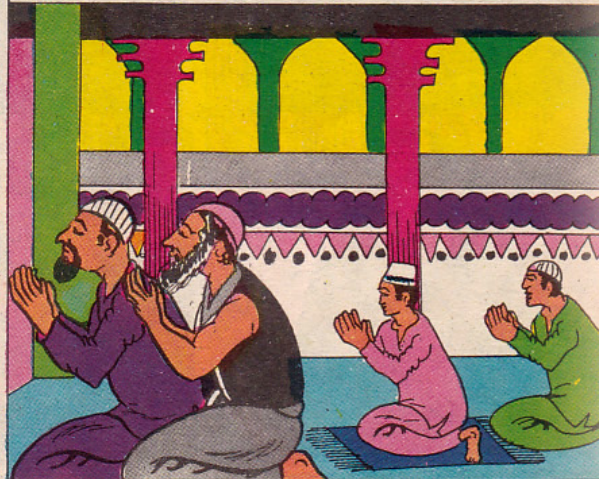
नमाज के बाद बच्चों ने हिंडोले पर धावा बोला।
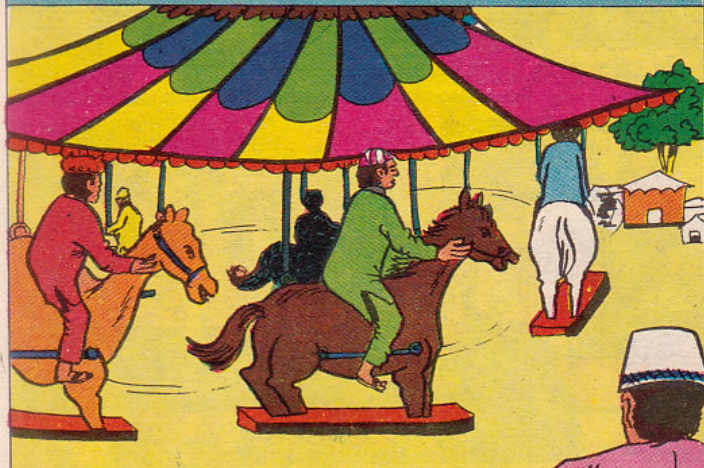
सब झूले पर झूल रहे थे पर हामिद एक कोने में खड़ा था। वह किसी सोच में मग्न था।
मेरे पास कुल तीन तो पैसे है। अपने इस कोष का एक तिहाई भाग मैं इस झूले पर चक्कर खाने में खर्च नहीं कर सकता।

थोड़ी देर बाद हामिद और उसके दोस्त खिलौनों की दुकान पर जा पहुंचे।
खिलौने यहां मिलते है।
बाइस्कोप
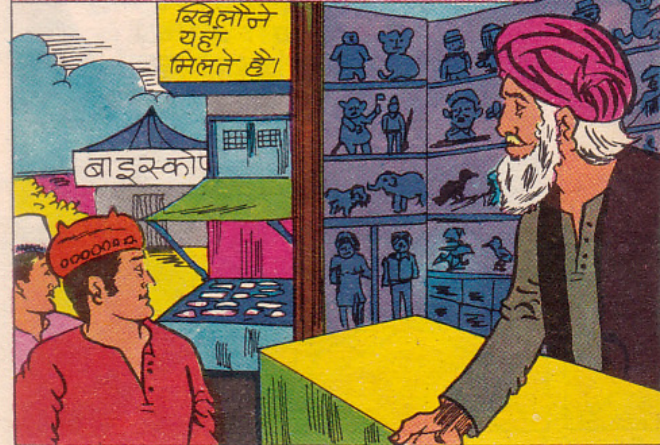
महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कन्धे पर बन्दूक रखे हुए। मालूम होता है अभी कवायद किये चला आ रहा है।
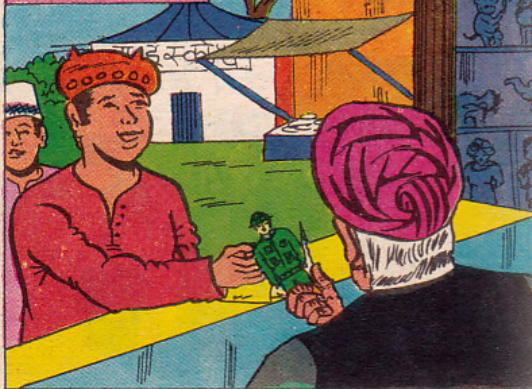
हामिद के दोस्त हामिद को मिठाईयां दिखा-दिखाकर चिढ़ा रहे थे।

ले हामिद मिठाई ले ले अब की जरूर देंगे ले, ले जा।

रखे रहो अपनी मिठाई अपने पास। क्या मेरे पास पैसे नहीं हैं?

तीन ही तो है। तीन पैसे में क्या कर लेगा?

तब मोहसिन ने कहा-
लेकिन दिल में तो कह रहे होंगे कि मिलें तो खा लें। अरे, अपने पैसे क्यों नहीं निकालते?

हम समझते हैं इसकी चालाकी। जब हमारे पास पैसे खर्च हो जायेंगे तो हमें ललचा-ललचा कर मिठाई खायेगा। बड़ा चालाक है ये।

मिठाइयाँ खाने के बाद वे सब फिर आगे बढ़ गए। आगे कुछ दुकानें लोहे की चीजों की थी। वहाँ कोई भी आकर्षण न देख बच्चे आगे बढ़ गए पर हामिद लोहे की चीजों की एक दुकान पर ठिठक गया..

..और सोचने लगा।
दादी माँ के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियां उतारने पर हाथ जल जाता है। अगर मैं एक चिमटा ले जाकर दादी को दे दूं तो वह कितनी प्रसन्न होंगी..
फिर खिलौनों से क्या फायदा? फिजूल में पैसों की बर्बादी है। खिलौने तो घर पहुंचने तक ही टूट फूट जायेंगे फिर एक तरह से देखा जाये तो चिमटा कितने काम की चीज है। रोटियां तवे से उतार लो, चूल्हे में सेंक लो। कोई आग मांगने आये तो चटपट चूल्हे से आग निकाल कर उसे दे दो।

DOT-N-LINE FEATURES 1988
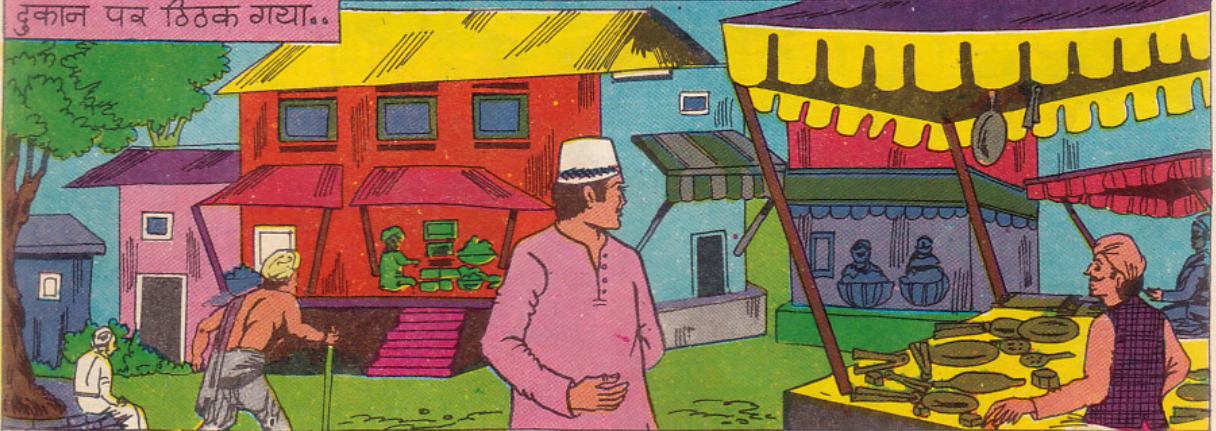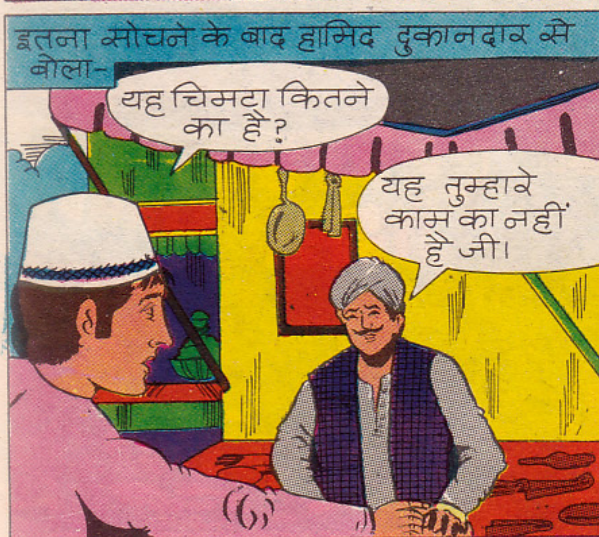
यह कहता हुआ वह आगे बढ़ गया कि दुकानदार की घुड़कियाँ न सुने, लेकिन दुकानदार ने घुड़कियाँ नहीं दी। बुलाकर चिमटा दे दिया।
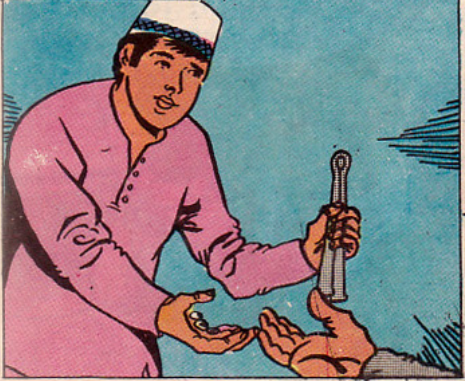
हामिद उसे कंधे पर रखकर शान से अकड़ता हुआ अपने साथियों के पास आया-
यह चिमटा क्यों लाया पगले, इसका क्या करेगा?
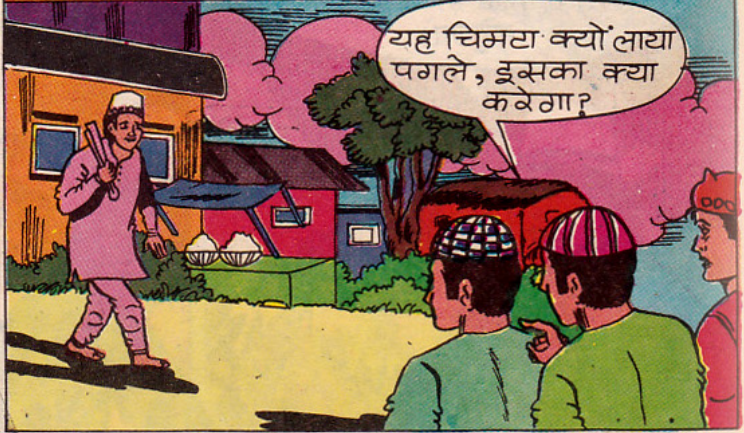
ताव में आकर हामिद ने चिमटे को जमीन पर पटककर कहा-
जरा अपना भिश्ती जमीन पर गिरा दो। सारी पसलियाँ चूर हो जायेंगी बच्चा की।

यह चिमटा भी कोई खिलौना है?
खिलौना क्यों नहीं है। अभी कंधे पर रखा बंदूक हो गई। हाथ में ले लिया तो फकीरों का चिमटा हो गया चाहूं तो इससे मंजीरे का काम ले सकता हूं। एक चिमटा जमा दूं तो..

तुम लोगों के सारे खिलौनों की जान निकल जाये। तुम्हारे खिलौने कितना ही जोर लगायें, मेरे चिमटे का बाल भी बांका नहीं कर पायेंगे। मेरा बहादुर शेर है चिमटा।

सम्मी ने खंजरी ली थी। वह हामिद से बोला-
हामिद मेरी खंजरी से चिमटा बदलोगे दो आने की है।
मेरा चिमटा चाहे तो तुम्हारी खंजरी का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्ली लगा दी तो ढब-ढब बोलने लगी..

..जरा सा पानी लग जाये तो खत्म हो जाये। मेरा चिमटा आग में, पानी में आँधी तूफान में बराबर डटा रहेगा।

हामिद का यह तर्क सुनकर मोहसिन बोला-
अच्छा, तुम्हारा चिमटा पानी तो नहीं भर सकता।
मेरा चिमटा भिश्ती को एक डांट बतायेगा तो दौड़ा हुआ द्वार पर पानी छिड़कने लगेगा।

तब महमूद हामिद को नीचा दिखाने की गरज से बोला-
अगर बच्चा पकड़े गए तो अदालत में बंधे-बंधे फिरेंगे, तब तो वकील साहब के पैरों पड़ेंगे
पर हमें पकड़ने कौन आएगा?
यह सिपाही बंदूक वाला

तब हामिद ने नूरे के कथन पर चोट की-
यह बेचारे हम रूस्तमे हिन्द को पकड़ेंगे। अच्छा लाओ, अभी जरा कुश्ती हो जाये। इनकी सूरत देख कर दूर से ही भागेंगे सिपाही, पकड़ेंगे क्या बेचारे?

तब मोहसिन को एक नई चोट सूझी।
तुम्हारे चिमटे का मुंह रोज आग में जलेगा।
आग में बहादुर ही कूदते है जनाब। तुम्हारे यह भिश्ती, वकील, लौंडियों की तरह..

..घर में घुस जायेंगे। आग में कूदना वह काम है जो रूस्तमे-हिन्द ही कर सकते हैं।

तब हामिद को स्वीकार करना पड़ा।

खिलौने देखकर किसी की मां इतनी खुश न होगी जितनी दादी इस चिमटे को देखकर होगी। अपने पैसों के उपयोग पर मुझे पछतावे की जरूरत भी नहीं है।
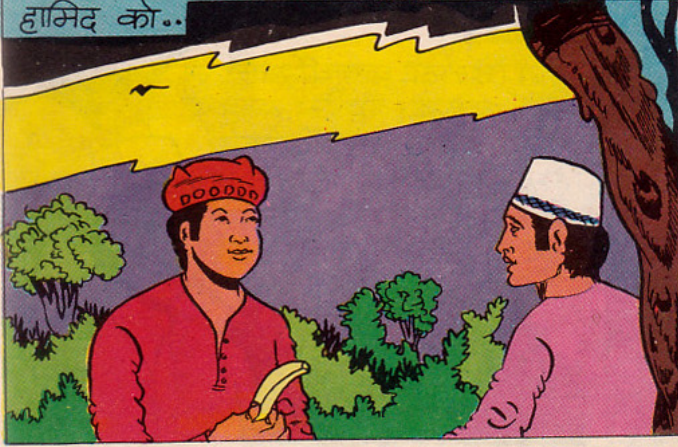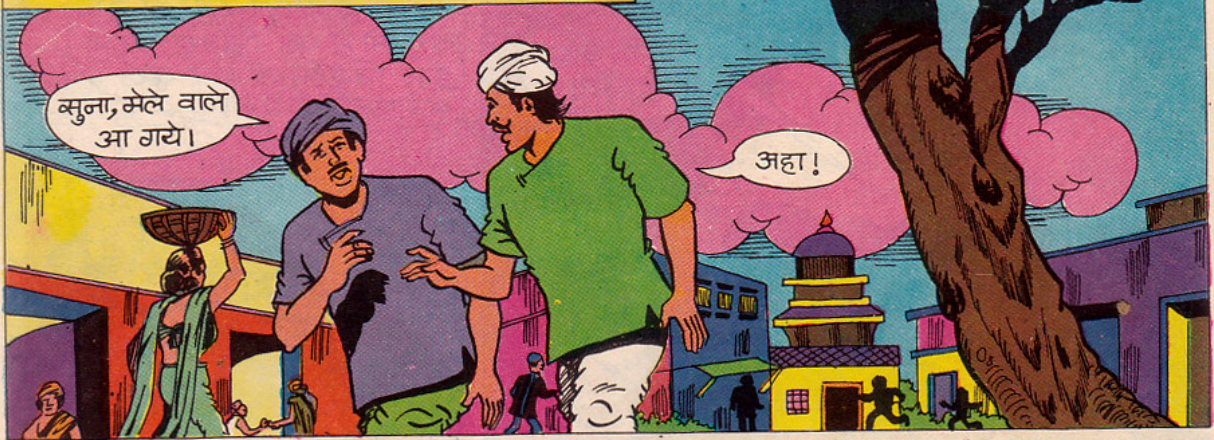
मोहसिन की बहन ने दौड़कर उसके हाथ से भिश्ती छीन लिया। जल्दबाजी में मियाँ भिश्ती जमीन पर गिरे और स्वर्ग सिधार गए।
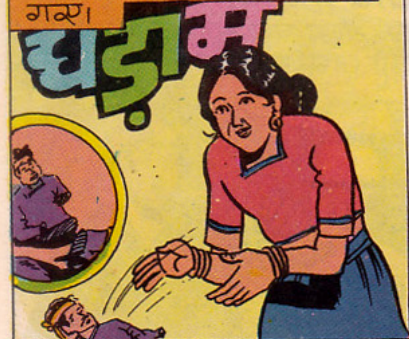
घड़ाम
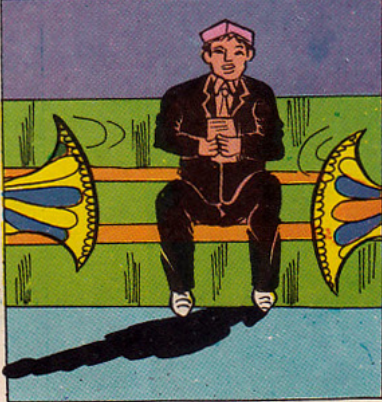
अब बारी महमूद के सिपाही की थी। उसे गांव का पहरा देने का चार्ज मिल गया। नूरे और महमूद उसे एक टोकरी में रखकर द्वार पर चक्कर लगाने लगे।
सोने वालों, जागते रहो।

महमूद को ठोकर लग जाती है। टोकरी उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती ह और मियां सिपाही अपनी बन्दूक लिये जमीन पर आ जाते हैं और उनकी एक टांग में विकार आ जाता है।
धड़ाम

महमूद को आज ज्ञात हुआ कि वह एक अच्छा डॉक्टर है उसको ऐसा मरहम मिल गया है जिससे वह टूटी टांग को आनन-फानन में जोड़ सकता है, केवल गूलर का दूध चाहिए। गूलर का दूध आता है और टांग जोड़ दी जाती है..
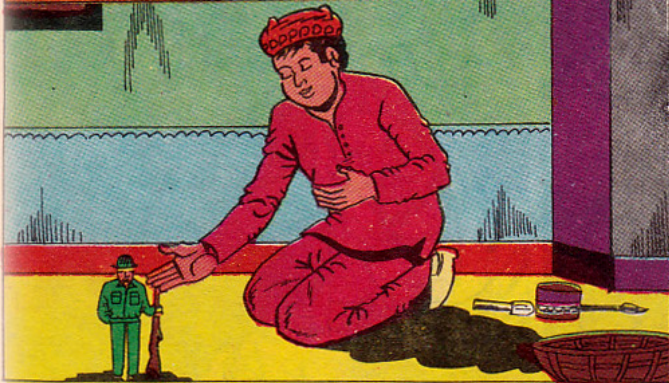
..पर उसकी टाँग ने तो जवाब दे दिया तब मजबूर होकर उसकी दूसरी टांग भी तोड़ दी गई ताकि वह आराम से बैठ सके।

उधर मियां हामिद जब घर पहुंचे तो अमीना उनकी आवाज सुनते ही दौड़ी चली आई। सहसा उसके हाथ में चिमटा देखकर वह चौंक गई।
यह चिमटा कहां से लाया रे।
मैंने मोल लिया है।

कै पैसे में
तीन पैसे दिये।
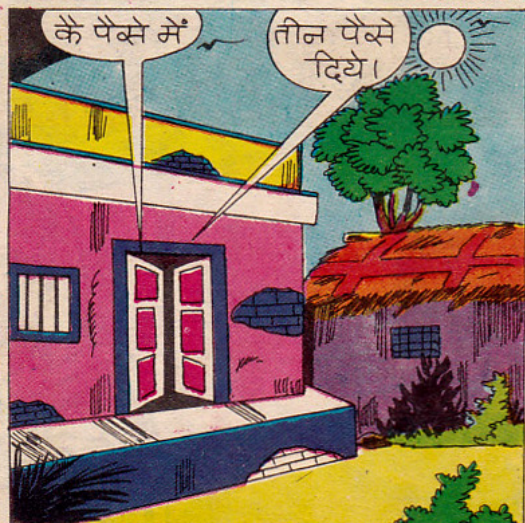
यह सुनकर अमीना ने छाती पीट ली।
कैसा नासमझ लड़का है। दोपहर हुआ, कुछ खाया न पिया और लाया क्या चिमटा सारे मेले में तुझे कोई चीज न मिली थी जो यह लोहे का चिमटा उठा लाया।

यह सुनकर हामिद ने अपराधी भाव से कहा-
तुम्हारी उंगलियां तवे से जल जाती थी न, इसलिए मैंने इसे खरीदा।

यह सुनकर अमीना की आंखों से आंसू छलक आए।
कितना सदभाव, त्याग और विवेक है इसमें। दूसरों को मिठाई खाते देख, लेते देख इसका मन कितना ललचाया होगा..
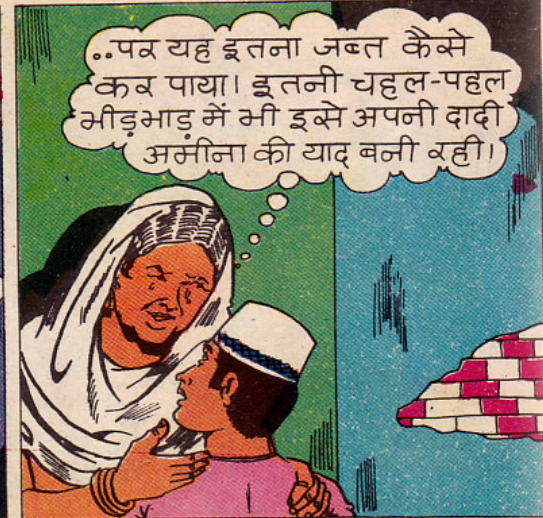
..पर यह इतना जब्त कैसे कर पाया। इतनी चहल-पहल भीड़भाड़ में भी इसे अपनी दादी अमीना की याद बनी रही।

तब अमीना ने हामिद को अपने सीने से लगा लिया। वह हामिद को दुआएं देती जाती थी और आंसुओं की बड़ी-बड़ी बूंदें गिराती जाती थी। आज हामिद ने बूढ़े हामिद का पार्ट खेला था और अमीना ने बालिका अमीना का।
समाप्त
DOT-N-LINE FEATURES